Shodh Sangam Patrika
E-ISSN: 3049-0707, Volume 3 | Issue 4 | (October - December 2026)

समकालीन भारत में लोकतांत्रिक मूल्यों के समक्ष उभरती चुनौतियाँ : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. ब्रजेश कुमार
अतिथि सहायक प्राध्यापक, स्नातकोत्तर राजनीति विज्ञान विभाग,
ए.एन.डी. कॉलेज, शाहपुर पटोरी, समस्तीपुर

शोध-सारांश:

भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। यहाँ लोकतंत्र न सिर्फ मात्रात्मक दृष्टि से विद्यमान है बल्कि गुणात्मक दृष्टि से सरकार के सभी कार्यों में परिलक्षित भी होता है। संविधान निर्माताओं ने वास्तव में लोकतंत्र को संविधान की आत्मा के रूप में स्वीकार किया है। विश्लेषकों का मानना है कि भारत ने ही पूरी दुनिया को लोकतांत्रिक शासन प्रणाली से परिचित कराया है। भारतीय संविधान में लोकतंत्र की सभी विशेषताओं को पूर्ण रूप से अपनाया गया है। स्थानीय निकायों, विधानमंडलों एवं संसदीय चुनावों के संबंध में व्यापक प्रावधान किया गया है। संविधान के अंतर्गत सरकार एवं इससे जुड़ी सभी संस्थाओं के संबंध में व्यापक प्रावधान किया गया है ताकि सरकार एवं इससे संबंधित संस्थाएं सदैव जनहित को केंद्र बिंदु में रखकर ही विभिन्न नीतियों का निर्माण करें और विभिन्न कार्यक्रमों का संचालन करें। वास्तव में हम कह सकते हैं कि लोकतांत्रिक मूल्य ही भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति की पहचान रहे हैं। वर्तमान में देश में कतिपय स्थितियों जैसे संवैधानिक संस्थाओं पर दबाव, सामाजिक और आर्थिक असमानता में वृद्धि, जन प्रदर्शनों को कुचलना एवं विपक्ष की कमजोर स्थिति आदि का सृजन हुआ है जो लोकतंत्र के समक्ष महत्वपूर्ण चुनौतियाँ हैं।

मुख्य शब्द: लोकतंत्र, आत्मा, स्थानीय निकाय, विधानमंडल, संसदीय चुनाव, लोकतांत्रिक मूल्य, जनहित, सभ्यता एवं संस्कृति।

भूमिका

भारत वर्तमान में आर्थिक महाशक्ति बनने की ओर अग्रसर है। विश्व की बड़ी शक्तियाँ अब भारत के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने को इच्छुक हैं। विश्व के विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भारत को आशा भरी निगाहों से पूरी दुनिया देख रही है। आंतरिक दृष्टि से भी भारत दिन पर दिन विकसित राष्ट्र बनने हेतु लगातार क्रांतिकारी निर्णय ले रहा है। देश में नागरिकों को गुणवत्तायुक्त जीवन प्रदान करने हेतु सदैव नवीन निर्णय लिए जा रहे हैं। केंद्र सरकार एवं राज्य सरकारें लोकतांत्रिक मूल्यों को आधार बनाकर ही सामाजिक एवं आर्थिक विकास हेतु नए-नए कार्यक्रम संचालित कर रही हैं। देश में आम लोगों को भी शासन कार्यों में भागीदार बनाने हेतु स्थानीय निकाय की संस्थाओं को मजबूत किया जा रहा है। देश में महिलाएँ, जो सदैव नीति निर्माण से संबंधित कार्यों से दूर रही हैं, उन लोगों को भी अब राजनीति एवं नीति निर्माण से संबंधित कार्यों में भागीदार बनाने हेतु राजनीति और प्रशासन में महिलाओं के लिए आरक्षण की व्यवस्था की गई है। इसके बावजूद भी वर्तमान में देश में लोकतांत्रिक मूल्यों के समक्ष कतिपय नई चुनौतियां सृजित हो गई हैं। इन चुनौतियों में सामाजिक एवं आर्थिक असमानता में वृद्धि, देश के कतिपय वर्गों में राजनीतिक एवं प्रशासनिक भागीदारी की कमी, शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक असमानता में वृद्धि, राजनीति एवं प्रशासन में भ्रष्टाचार एवं देश के विभिन्न भागों में जन प्रदर्शनों को कुचलना आदि प्रमुख हैं। इन चुनौतियों के समाधान हेतु नवीन पहल की आवश्यकता है।

लोकतंत्र : अर्थ एवं विशेषता

लोकतंत्र एक ऐसी शासन पद्धति है जिसमें शासन का संचालन स्वयं जनता के द्वारा या जनता के प्रतिनिधियों के द्वारा किया जाता है। शासन की सभी पद्धतियों में लोकतंत्र को सर्वोत्कृष्ट माना जाता है। वास्तव में इस शासन पद्धति में जनता ही पूरी व्यवस्था के केंद्र बिंदु में होती है। इस शासन व्यवस्था में जनइच्छा ही सब कुछ होती है। लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था वास्तव में बहुमत का शासन होता है। इस व्यवस्था में नियमित तरीके से चुनाव होता है।

लोकतंत्र की महत्वपूर्ण विशेषताओं को निम्नलिखित तरीके से देखा जा सकता है:

1. नियमित अंतराल पर चुनाव : लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था की सबसे बड़ी विशेषता यह होती है कि इसमें नियमित अंतराल पर चुनाव कराने का प्रावधान होता है। इसमें समय-समय पर जनता को सरकार बनाने का अवसर मिलता है।

2. जनता का शासन : लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह होती है कि इसमें जनता का शासन होता है। वास्तव में इस शासन व्यवस्था में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष जनता ही मालिक होती है।

3. उत्तरदायी सरकार : लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह होती है कि इसमें शासन से संबंधित सभी संस्थाएं जनता के प्रति उत्तरदायी होती हैं।

4. राजनीतिक भागीदारी : लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह होती है कि इसमें लोगों की समुचित राजनीतिक भागीदारी होती है। इसमें सभी लोगों को एकसमान मत देने का अधिकार होता है।

5. स्वतंत्र मीडिया : लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था की एक महत्वपूर्ण विशेषता इसमें स्वतंत्र मीडिया का होना है। मीडिया को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ माना जाता है।

6. विधि का शासन : विधि का शासन लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। विधि के शासन की स्थिति में कोई भी सरकारी एवं गैर सरकारी गतिविधि विधि के अनुसार ही होती है। कोई भी व्यक्ति विधि से ऊपर नहीं होता है।

7. स्वतंत्र न्यायपालिका : लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था की एक बहुत महत्वपूर्ण विशेषता स्वतंत्र न्यायपालिका है। स्वतंत्र न्यायपालिका की स्थिति में न्यायिक व्यवस्था किसी व्यक्ति अथवा समूह से प्रभावित नहीं होती है। न्यायालय के द्वारा विधि के अनुसार ही निर्णय लिए जाते हैं।

8. जनभागीदारी : लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था की एक महत्वपूर्ण विशेषता जनभागीदारी की होती है। इस शासन व्यवस्था में जनता की भागीदारी निर्णयन के सभी स्तरों पर सुनिश्चित की जाती है।

समकालीन भारत में लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थिति

लोकतंत्र भारतीय शासन व्यवस्था की आत्मा है। देश में संविधान का निर्माण भी लोकतांत्रिक मूल्यों के आधार पर ही किया गया है। स्वतंत्रता प्राप्ति से लेकर अभी तक केंद्र सरकार और राज्य सरकारें लोकतांत्रिक मूल्यों को आधार बनाकर ही सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में विकास हेतु समय-समय पर नवीन पहलें करती रही हैं।

समकालीन भारत में केंद्र सरकार एवं राज्य सरकारों के गठन के साथ-साथ स्थानीय सरकारों के गठन एवं उनके सशक्तिकरण हेतु भी विभिन्न पहलें की गई हैं। वास्तव में स्थानीय निकायों के गठन का मुख्य उद्देश्य जनभागीदारी को सुनिश्चित करना है। स्थानीय निकाय, जिनमें मुख्य रूप से नगरीय निकाय एवं पंचायती राज निकाय शामिल हैं, स्थानीय स्तर पर लोकतंत्र को स्थापित करने हेतु सशक्त माध्यम हैं[4]।

देश में वर्तमान समय में लोककल्याणकारी राज्य की अवधारणा को धरातल पर उतारने हेतु केंद्र एवं राज्य सरकारों के द्वारा विविध पहलें की जा रही हैं। लोककल्याणकारी राज्य से अभिप्राय राज्य के द्वारा सभी व्यक्तियों का सभी क्षेत्रों में विकास करने से है। वर्तमान में देश में प्रत्येक व्यक्ति को एक महत्वपूर्ण संसाधन मानते हुए उसके समुचित विकास पर व्यापक बल दिया जा रहा है।

देश में वर्तमान समय में समाज के वंचित एवं निर्धन परिवारों के विकास हेतु विभिन्न योजनाएँ एवं कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं। ये योजनाएं एवं कार्यक्रम लोकतांत्रिक मूल्यों पर ही आधारित हैं। इन योजनाओं एवं कार्यक्रमों का व्यापक सकारात्मक प्रभाव देश की अधिसंख्य आबादी पर पड़ा है। इससे सामाजिक एवं आर्थिक समानता के उद्देश्य को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण सहयोग मिल रहा है।

हाल के दिनों में कई राज्यों में विधि के शासन की स्थापना हेतु महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए हैं। उदाहरण के लिए बिहार में सहयोग कार्यक्रम की शुरुआत की गई है, इसमें जन शिकायतों का समाधान 30 दिनों के अंदर करने का प्रावधान किया गया है। यदि कोई अधिकारी जन शिकायतों का समाधान 30 दिनों के अंदर नहीं करता है तो उसके बाद वह स्वतः निलंबित माना जाता है।

हाल के वर्षों में भारत में डिजिटल शासन का व्यापक प्रभाव पड़ा है। इससे समाज की कतिपय समस्याओं जैसे भ्रष्टाचार, अवैध गतिविधियों एवं मानव के खिलाफ अपराधों आदि में काफी कमी आई है। इससे भी देश में लोकतांत्रिक मूल्यों में सकारात्मक वृद्धि हुई है।

चुनौतियां-

भारत में वर्तमान समय में लोकतांत्रिक मूल्यों के समक्ष कतिपय चुनौतियां दृष्टिगोचर हो रही हैं। इनमें से महत्वपूर्ण चुनौतियाँ निम्न हैं:

1. राजनीतिक दलों में विकृतियां : हाल के वर्षों में देश के अधिसंख्य राजनीतिक दलों में विभिन्न विकृतियों जैसे परिवारवाद, जातिवाद, धनबल एवं बाहुबल आदि के प्रभाव में काफी वृद्धि हुई है। ये विकृतियां वास्तव में देश में लोकतांत्रिक मूल्यों के समक्ष गंभीर चुनौतियां हैं।

2. संवैधानिक संस्थाओं पर दबाव : वर्तमान में देश के कतिपय विश्लेषकों का मानना है कि देश की कई संवैधानिक संस्थाएं संविधान में वर्णित प्रावधानों के अनुसार कार्य नहीं कर पा रही हैं। इन लोगों के अनुसार ये संस्थाएं वर्तमान में एक विशेष प्रकार के दबाव में हैं।

3. गठबंधन सरकार : हाल के वर्षों में देश में न सिर्फ केंद्र के स्तर पर बल्कि राज्यों के स्तर पर भी गठबंधन सरकारें गठित हो रही हैं। वास्तव में ये गठबंधन सरकारें भी कहीं न कहीं लोकतांत्रिक मूल्यों के विपरीत प्रतीत होती हैं। कई बार यह देखने को मिलता है कि किसी चुनाव में सबसे बड़ा दल सरकार नहीं बना पाता है जबकि छोटे दल मिलकर सरकार का गठन कर लेते हैं।

4. न्यायिक प्रक्रियाओं की जटिलता : वर्तमान में देश में न्यायिक प्रक्रिया इतनी जटिल एवं लंबी है कि एक आम आदमी न्यायिक प्रक्रिया में भाग लेने से पहले कई बार सोचता है। देश में जिला अदालत से लेकर सर्वोच्च न्यायालय तक बड़ी संख्या में मुकदमे लंबित हैं। एक आम व्यक्ति को न्याय प्राप्त करने में वर्षों का समय लग जाता है7।

5. सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं की जटिलता : देश में सामाजिक और आर्थिक क्षेत्रों में विकास की प्रक्रिया जारी है। इसके बावजूद भी अभी भी देश की एक बड़ी आबादी विविध सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं से पीड़ित है। इस वर्ग समूह के पास अभी भी निर्धनता, बेरोजगारी, असमानता एवं वंचना आदि समस्याएं गंभीर रूप से विद्यमान हैं।

6. मीडिया की भूमिका पर प्रश्नचिह्न : हाल के वर्षों में देश में मीडिया की भूमिका पर प्रश्नचिन्ह लगा है। कई विश्लेषकों का मानना है कि देश में अधिसंख्य मीडिया समूह एक पक्षीय दृष्टिकोण को अपना रहे हैं।

7. राजनीतिक एवं प्रशासनिक विकृतियां : देश में अभी भी विविध राजनीतिक एवं प्रशासनिक विकृतियां जैसे भ्रष्टाचार, लालफीताशाही एवं कार्य कुशलता का अभाव आदि विद्यमान हैं। ऐसी ही विकृतियाँ लोकतांत्रिक मूल्यों के समक्ष गंभीर चुनौतियां हैं।

8. जन प्रदर्शनों को कुचलना : जन प्रदर्शन लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था के आधार रहे हैं। हाल के दिनों में देश में जन प्रदर्शनों को जिस तरीके से कुचला गया है, यह लोकतंत्र के लिए अच्छा नहीं है।

निष्कर्ष एवं भविष्य की दिशा

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि भारत में राजनीतिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था का आधार लोकतंत्र ही है। भारतीय संविधान के निर्माताओं ने जिस संविधान का निर्माण किया है, वह संविधान वास्तव में लोकतांत्रिक मूल्यों पर ही आधारित है और वह लोकतंत्र की सुरक्षा को सुनिश्चित करता है। हाल के वर्षों में देश में कतिपय ऐसी घटनाएं घटित हुई हैं, जिन्हें कतिपय विश्लेषक लोकतांत्रिक मूल्यों के समक्ष गंभीर चुनौती के रूप में मान रहे हैं। इन चुनौतियों के समाधान हेतु निम्न पहल करने की आवश्यकता है:

1. संस्थागत स्वतंत्रता को सुनिश्चित करना : देश में हाल के वर्षों में विविध संवैधानिक संस्थाओं की भूमिका पर प्रश्नचिह्न लगा है। वर्तमान में जरूरत इस बात की है कि सरकार के द्वारा इन संस्थाओं की स्वतंत्रता के संबंध में स्पष्ट संदेश दिया जाना चाहिए और जो आलोचक आलोचना कर रहे हैं, उनके संदेहों को सार्वजनिक तौर पर समाप्त कराना चाहिए। इससे देश में लोकतांत्रिक मूल्यों की सुरक्षा सुनिश्चित हो सकेगी।

2. राजनीतिक दलों की कार्यप्रणाली में सुधार : देश में राजनीतिक दलों की अहम भूमिका सरकार के गठन एवं संचालन में होती है। हाल के वर्षों में देश के अधिकांश राजनीतिक दलों में कतिपय समस्याएं जैसे परिवारवाद, जातिवाद, धनबल एवं बाहुबल का अधिक प्रयोग, आंतरिक लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं का अभाव आदि व्यापक स्तर पर दृष्टिगोचर हो रही हैं। इन समस्याओं को अतिशीघ्र समाप्त करने की आवश्यकता है। इसके लिए राजनीतिक दलों को स्वयं आगे आना होगा।

3. राजनीतिक एवं प्रशासनिक विकृतियों को समाप्त करना : देश में विभिन्न वैधानिक उपायों के बावजूद भी अभी भी विभिन्न राजनीतिक एवं प्रशासनिक विकृतियां जैसे भ्रष्टाचार, कार्य कुशलता का अभाव, भाई-भतीजावाद एवं लालफीताशाही आदि व्यापक स्तर पर विद्यमान हैं। इन समस्याओं को अतिशीघ्र समाप्त करने की आवश्यकता है।

इससे देश में लोकतांत्रिक मूल्यों की सुरक्षा सुनिश्चित हो पाएगी। इसके लिए विभिन्न कानूनों को सख्त करने की आवश्यकता है।

4. सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक असमानता को समाप्त करना : देश में अभी भी सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक असमानताएं व्यापक स्तर पर विद्यमान हैं। सामाजिक एवं आर्थिक असमानता को समाप्त करने हेतु देश में सामाजिक एवं आर्थिक विकास की प्रक्रिया को तीव्र करने की आवश्यकता है। देश में शैक्षणिक असमानता को समाप्त करने हेतु सभी बच्चों के लिए एकसमान शिक्षा प्रणाली को अतिशीघ्र लागू करने की आवश्यकता है।

5. न्यायिक समस्याओं का समाधान : वर्तमान में देश में न्यायिक समस्याएं व्यापक स्तर पर विद्यमान हैं। यह स्थिति कहीं न कहीं लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति गंभीर चुनौती है। इसके समाधान हेतु विभिन्न न्यायालयों में न्यायाधीशों की संख्या में वृद्धि करने के साथ-साथ निश्चित समय सीमा में लोगों को न्याय सुनिश्चित करने हेतु वैधानिक उपाय करने की जरूरत है।

6. जन प्रदर्शनों का लोकतांत्रिक समाधान : वर्तमान में देश के कई राज्यों में सरकार की दोषपूर्ण नीतियों के खिलाफ लगातार जन प्रदर्शन हो रहे हैं। जरूरत इस बात की है कि इन प्रदर्शनों का लोकतांत्रिक तरीके से समाधान निकाला जाए। यदि जन प्रदर्शनों का लोकतांत्रिक समाधान होता है तो इससे देश में लोकतांत्रिक मूल्यों की सुरक्षा सुनिश्चित हो सकेगी।

7. नागरिक शिक्षा का प्रावधान : देश में लोकतांत्रिक मूल्यों के संरक्षण हेतु कम पढ़े-लिखे लोगों के लिए नागरिक शिक्षा की व्यवस्था करने की जरूरत है। नागरिक शिक्षा मिलने पर संबंधित व्यक्ति अपने अधिकारों एवं कर्तव्यों को भली-भाँति समझेगा और इससे देश में लोकतंत्र सशक्त होगा।

संदर्भ सूची

1. कोठारी, रजनी, पॉलिटिक्स इन इंडिया, नई दिल्ली, ओरियंट लांगसेंस, 1970
2. जौहरी एवं गुप्ता, भारतीय शासन एवं राजनीति, विशाल पब्लिकेशन।
3. डॉ. पुखराज जैन एवं डॉ. बी. एल. फाड़िया, भारतीय शासन एवं राजनीति, साहित्य भवन पब्लिकेशन, 2010
4. हिंदुस्तान दैनिक समाचार पत्र, पटना संस्करण, पटना।
5. प्रभात खबर दैनिक समाचार पत्र, दिल्ली संस्करण, दिल्ली।